विश्वव्यापी सुसमाचार व्यवहार में

इब्राहीम की संतान के लिए मूसा की व्यवस्था को छोड़ना कठिन था। उन सभी पर्वों, बलिदानों, रीतियों, खाने-पीने तथा व्यक्तिगत जीवन की विधियों को छोड़ने के लिए विस्मयकारक बदलावों की आवश्यकता थी। इन यहूदियों के लिए न मानने वाले परिवर्तनों में से सबसे बड़ा परिवर्तन घृणित अन्यजातियों को हर प्रकार से अपने बराबर मानना था।

इन परिवर्तनों का इतना कठिन होने का मुख्य कारण यह था कि यहूदी लोग व्यवस्था का दुरुपयोग करते थे। परमेश्वर ने व्यवस्था यहूदियों को कठोर, विधिज्ञ, जातिगत रूप से पूर्वाग्रहपूर्ण या स्वधर्मी होने की अनुमति देने के लिए नहीं बनाई थी। परन्तु, यीशु द्वारा अपनी सेवकाई के दौरान कपटी, स्वधर्मी यहूदियों को डांट लगाए जाने से, उनके आचरण पर पर्दा नहीं रहा। केवल मत्ती 23 में ही यीशु ने शास्त्रियों तथा फरीसियों का हाल बताने के लिए सात बार ''हाय'' शब्द का इस्तेमाल किया। ''हाय'' कहते हुए, उसने एक बार छोड़कर हर बार उन्हें कपटी कहा, और उस बार उसने उन्हें अन्धे अगुवे कहा (आयत 16)।

ये धार्मिक अगुवे यह मानकर व्यवस्था का दुरुपयोग करते थे कि वे व्यवस्था का पालन करके परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहर सकते हैं। पौलुस ने दुखी हृदय से इस स्थिति पर विलाप किया (रोमियों 9:1-5)। उसने उनके जोश के लिए उनकी सराहना तो की पर उसने व्यवस्था का पालन करके अपनी ही धार्मिकता बनाए रखने की इच्छा के लिए यहूदी अगुओं को डांटा (रोमियों 10:1-4)। गलत विचार पालकर, यहूदी लोग यह मानने लगे थे कि मसीह केवल उनके भले के लिए ही था। उनका मानना था कि केवल इब्राहीम की संतान ही उद्धार पाएगी और अन्यजातियों को कभी भी परमेश्वर का अनुग्रह पाने का अवसर नहीं मिलेगा। उनका मानना था कि अन्य जातियों के लोग कुत्तों से बढ़कर नहीं थे।

इस तीव्र, तर्कहीन राष्ट्रीयता ने पहली शताब्दी के यहूदियों को आत्म-संतुष्टि, स्वधर्मी होने और उस संकुचित सोच की दलदल में फंसा दिया था जिसकी तुलना शायद ही संसार के इतिहास में कहीं मिलती हो। प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, यह समस्या बार-बार बोलते समय मुंह से लार गिरने की तरह मिलती ही रहती है।

प्रेरित भी संकुचित सोच की समस्या के आत्मिक अन्धेपन से पीड़ित थे। यद्यपि आमतौर पर प्रेरित उन्हें गलत समझते थे, परन्तु आत्मा की प्रेरणा से दिए गए कथनों में अन्यजातियों के उद्धार को भी शामिल किया जाता था। जब यीशु ने उन्हें ''सारे जगत में

जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार'' करने के लिए कहा (मरकुस 16:15), तो उन्हें लगा कि उसने उन्हें ''सारी सृष्टि के *यहूदी* लोगों को सुसमाचार प्रचार'' करने के लिए कहा है। जब यीशु ने उन्हें ''जाकर सब जातियों के लोगों को चेला'' बनाने के लिए कहा (मत्ती 28:19), तो प्रेरितों को लगा कि उसके कहने का अर्थ ''जाकर सब जातियों के *यहूदियों* को चेला'' बनाना था। पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने प्रचार किया कि यह प्रतिज्ञा उस दिन वहां उपस्थित लोगों के लिए ही नहीं बल्कि ''उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। शायद पतरस द्वारा इस कथन का प्रचार करने और अन्य प्रेरितों द्वारा इसे सुनने और इस संदेश का प्रचार करने में, उनके विचार से इसका अर्थ था दूर-दूर तक रहने वाला हरेक *यहूदी*। इसलिए, प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर, प्रेरितों ने किसी भी अन्यजाति को सुसमाचार का अनुग्रह देने की बात नहीं की!

पतरस ने सुलैमान के ओसारे में प्रचार किया कि जो वाचा और प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को दी गई थीं उनमें ''पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे'' (प्रेरितों 3:25)। शायद, बन्द दिमाग वाले यहूदियों ने इसका अर्थ सभी *यहूदी* घराने लगाया, परन्तु परमेश्वर का अर्थ बिना किसी जाति भेद के पृथ्वी के सारे घरानों को शामिल करना था।

तरसुस के शाऊल के मन परिवर्तन के समय, हनन्याह को, जिसने उसे बपतिस्मा दिया था, बताया गया कि शाऊल ''अन्यजातियों ... के साम्हने मेरा [यीशु का] नाम प्रगट'' करेगा (प्रेरितों 9:15)। क्योंकि शाऊल का मन परिवर्तन कलीसिया की स्थापना के चार वर्षों बाद हुआ था, इसलिए ऐसा लगता है जैसे कि हनन्याह ने परमेश्वर की बात को दूसरों को बताया हो। यह परेशान करने वाली बात है कि प्रेरितों और यहूदियों ने इस महत्वपूर्ण तथ्य को इतनी देर तक नज़रअन्दाज किया।

अन्य जातियों में सुसमाचार को पहुंचाने के लिए प्रेरितों को कई अतिरिक्त आश्चर्यकर्म और कई वर्षों का समय चाहिए था! जब अन्ततः पतरस कुरनेलियुस नामक एक रोमी सूबेदार के घर जाने को राज़ी हो गया, तो भी एक अन्यजाति के पहले मनपरिवर्तन को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रकाशन तथा आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता पड़ी (प्रेरितों 10)। फिर भी, पतरस की उसके अपने ही भाइयों द्वारा उसी जातिगत पूर्वधारणा के साथ आलोचना की गई और उसे अपने कार्यों का जवाब देने के लिए बुलाया गया और पीड़ित किया गया (11:1-18)। इस समस्या के बारे में परमेश्वर की सच्चाई को बताना प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्ययन में समाहित है।

एक विश्वव्यापी व्यवहार

समय लगा

सामान्य कैलेण्डर की गणना के अनुसार प्रेरितों 2 अध्याय के पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाएं 33 ईस्वी में घटीं। अधिकतर विद्वान कुरनेलियुस के मन परिवर्तन (प्रेरितों 10)

को 38-40 ईस्वी के आस-पास मानते हैं। अन्यजातियों और खतना के बारे में उलझनें तथा प्रश्न यरूशलेम की विशेष सभाओं के होने तक नहीं सुलझे थे (प्रेरितों 15) जिन्हें विद्वान लोग 51 ईस्वी में हुआ मानते हैं।

फिर तो, मसीही लोगों में भी जाति सम्बन्धी इस प्रकार के झगड़ों को सुलझाने के लिए लगभग बीस वर्ष अर्थात दो दशक लग गए। प्रेरितों को पवित्र आत्मा की प्रेरणा दिए जाने के समय भी ऐसा होना अजीब लगता है। यह आवश्यक नहीं है कि परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा का आवश्यक अर्थ यही हो कि उनके पहले वाले व्यवहार बदल जाएं। परमेश्वर की सच्चाइयों को समझकर धीरे-धीरे ही प्रेरित लोग व्यवहारों और निर्णयों को सुधार सके थे।

परिवर्तन हुआ

प्रेरितों के काम में चार विलक्षण व्यवहार हैं। पहला, आरम्भिक मसीहियों का जो व्यवहार था वह इस प्रकार से अपने आप ही व्यक्त हो सकता है: ''क्या इब्रानी होना और मसीह के रूप में हमारे पास यीशु का होना बड़ी बात नहीं है?'' (यह व्यवहार प्रेरितों 1 से 7 में मिलता है।)

दूसरा, मन में मैल भरा अतिरिक्त व्यवहार व्यक्त किया गया था: ''हम सामरिया में यहूदी मत धारण करने वालों में प्रचार की बात को स्वीकार कर लेंगे, परन्तु इससे हम अधिक रोमांचित नहीं होंगे।'' (यह प्रेरितों 8 में मिलता है।)

तीसरा व्यवहार भी मिल सकता है जो कि अत्यधिक रूढ़िवादी था: ''हे पतरस, अन्यजाति लोगों को बपतिस्मा देने का तेरा क्या अर्थ है? परमेश्वर की इच्छा हो तो उसे और उसके घराने को स्वीकार किया जा सकता है, परन्तु इसके लिए उनका खतना होना आवश्यक है।'' (यह प्रेरितों 10 से 14 अध्याय में मिलता है।)

अन्त में, चौथे व्यवहार को जो कि सही और उचित था, समझा और माना गया: ''अब हमें समझ आ गई कि मसीह हर एक के लिए मरा, और हम सब लोगों में सुसमाचार का प्रचार करेंगे।'' (यह व्यवहार प्रेरितों 15 से 28 में दिखाया गया है।) केवल इस अन्तिम व्यवहार के आने से ही सुसमाचार विश्वव्यापी रूप में फैला।

विश्वव्यापी प्रचार

कुरनेलियुस की घटना में एक नाटकीय मोड़ आने से पहले प्रेरित यहूदियों और यहूदी मत धारण करने वालों में प्रचार करने के अलावा किसी और को वचन नहीं सुनाते थे (प्रेरितों 10:1-4)। रोमी साम्राज्य में वह एक सिपाही के रूप में असाधारण व्यक्ति था। वह श्रद्धालु, परमेश्वर का भय रखने वाला, दयालु, और प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था। फिर उसके नौकरों ने भी गवाही दी कि वह धर्मी, परमेश्वर का भय रखने वाला और सारी यहूदी जाति में सुनामी व्यक्ति था (आयत 22)। स्पष्टत:, उसका परमेश्वर से कुछ न कुछ सम्बन्ध तो था, परन्तु वह मसीही नहीं था।

जैसे कि प्रेरितों 10 में मिलता है, कुरनेलियुस की घटना में चार आश्चर्यकर्म हुए। पहला, यह कि एक स्वर्गदूत ने कुरनेलियुस को दर्शन देकर, सुसमाचार प्रचारक पतरस को बुलाने का निर्देश दिया (प्रेरितों 10:3-7)। पतरस ने अन्तर्लीनता में एक पात्र में बहुत से जन्तुओं को स्वर्ग से नीचे उतरने का दर्शन देखा (आयतें 9-16)। तीनों बार यह पात्र नीचे किया गया, पतरस को बताया गया कि उनमें से कुछ जन्तुओं को मारकर खा ले। उसमें से कुछ ऐसे जन्तु थे जिन्हें मूसा की व्यवस्था ने अशुद्ध ठहराया था, इसलिए पतरस ने उन्हें मारकर खाने से इन्कार कर दिया था। तीसरा आश्चर्यकर्म तब हुआ जब कुरनेलियुस के सेवक पतरस को ढूंढ़ते हुए आए और पवित्र आत्मा ने पतरस को उनके साथ जाने का निर्देश दिया (आयतें 17-20)। एक चौथे आश्चर्यकर्म में, पवित्र आत्मा ने कुरनेलियुस और उसके घराने पर आकर उन्हें भाषाएं बोलकर परमेश्वर की महिमा करने के योग्य बनाया (आयतें 44-46)।

इन आश्चर्यकर्मों में किसी से भी कुरनेलियुस और उसके घराने के पाप क्षमा नहीं हुए। इन आश्र्चकर्मों में किसी से भी उनमें से किसी का नया जन्म नहीं हुआ। ध्यान पूर्वक देखें कि इन आश्चर्यकर्मों ने क्या काम किया। पहले, कुरनेलियुस को स्वर्गदूत के दर्शन के कारण उसने सुसमाचार प्रचारक को बुलाया। कुरनेलियुस ने पतरस को बताया कि वह और उसका घराना उससे परमेश्वर की बातें सुनने को तैयार थे (आयत 33)। बाद में जब पतरस आपत्ति जताने वाले भाइयों के सामने अपने कामों की सफाई दे रहा था, तो उसने इस प्रकार से जोड़ा कि कुरनेलियुस को एक आदमी को बुलाने के लिए कहा गया जो उसे ऐसी बातें बताए जिनसे उसका उद्धार होगा (प्रेरितों 11:13, 14)। आपको यह निष्कर्ष निकालना ही पड़ेगा कि कुरनेलियुस का अभी तक उद्धार नहीं हुआ था और उसे पता था कि वह एक शिक्षक को बुला रहा है जो परमेश्वर की इच्छा को जानता है। पतरस के पास जन्तुओं से भरे पात्र के तीन बार नीचे आने से कुरनेलियुस का उद्धार नहीं हुआ, जिससे प्रचारक को यह समझाने में सहायता मिली कि वह कुरनेलियुस के सेवकों के साथ जाए। बल्कि, इससे पतरस और उसके छह भाई कायल हो गए कि अन्यजातियों में सुसमाचार देना सही तथा उचित था।

कुरनेलियुस के अन्य भाषाएं बोलने के बारे में कई तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है। पवित्र आत्मा उसके और उसके घराने पर उनके यीशु को परमेश्वर का पुत्र जानने से पहले उतरा। पतरस ने बताया कि ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर'' उतरा (प्रेरितों 11:15), इसलिए, यह उन्हें यीशु के बारे में बताने से पहले हुआ। फिर, वे बातें बताई गईं जिनसे कुरनेलियुस का उद्धार हुआ अर्थात जब तक वे वचन नहीं बोले गए, तब तक कुरनेलियुस को पापों से उद्धार नहीं मिल सका था (प्रेरितों 11:14)। पवित्र आत्मा कुरनेलियुस पर इन बातों के बोलने से पहले उतरा; इसलिए, अभी उद्धार पूरा नहीं हुआ था। कुरनेलियुस पर पवित्र आत्मा के आने के कारण पतरस ने अन्यजाति लोगों को सुसमाचार देने का तुरन्त निर्णय लिया। उसे प्रेरितों के स्वयं के पवित्र आत्मा में बपतिस्मे का स्मरण आया और उसने निष्कर्ष निकाला कि कुरनेलियुस के घराने पर इस प्रकार से आत्मा

के बपतिस्मे से इस स्थिति को परमेश्वर की स्वीकृति मिल गई है (प्रेरितों 11:16, 17)।

अन्त में, पतरस ने अपने अन्यजाति श्रोताओं को ''यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा'' देने की आज्ञा दी (प्रेरितों 10:48)। यह वही बपतिस्मा था जिसका पतरस ने प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम की भीड़ के सामने आठ-दस दिन पूर्व प्रचार किया था। ''यीशु मसीह के नाम में'' का अर्थ किसी व्यक्ति को उसके अधिकार से बपतिस्मा देना है। पतरस उसी बपतिस्मे का इस्तेमाल कर रहा था, क्योंकि दोनों ही यीशु मसीह के अधिकार से थे। परन्तु, पिन्तेकुस्त के दिन, उसने घोषणा की थी कि यह बपतिस्मा तुम्हारे ''पापों की क्षमा के लिए'' है (प्रेरितों 2:38)। यदि ऐसा है तो, कुरनेलियुस और उसके घराने के पाप तब तक क्षमा नहीं हुए थे जब तक उन्होंने मसीह में बपतिस्मा नहीं लिया था। आत्मा उनके बपतिस्मा लेने से पहले हुआ, इसलिए यह निश्चित है कि इस घटना में इस घराने के साथ आत्मा ने प्रत्यक्ष रूप से उद्धार का कोई कार्य नहीं किया।

बपतिस्मे की समझ प्रेरितों के काम की अन्य सभी घटनाओं के साथ-साथ बपतिस्मे की शिक्षा सम्बन्धी बातों के साथ मेल खाती है। तरसुस के शाऊल को भी बताया गया था, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। पौलुस ने जी उठने को मसीह में नये जीवन के साथ जोड़ा जो किसी के पानी के बपतिस्मे से ऊपर उठने के बाद होता है (रोमियों 6:3, 4)। इस संदर्भ में पौलुस ने यह भी वर्णन किया कि उस उपदेश को मानने वाला पाप से स्वतन्त्र हो जाता है (रोमियों 6:17, 18)। बपतिस्मा बाइबल की सभी शिक्षाओं में से सबसे कम समझ आने वाला है। शायद यह परमेश्वर की ओर से विश्वास की अन्तिम परीक्षा है! क्या पश्चात्तापी, विश्वास करने वाले पापियों का इतना विश्वास है कि वे बपतिस्मे जैसी किसी ऐसी बात के आगे समर्पण कर सकें जिसमें उन्हें कोई अर्थ दिखाई न देता हो।

सारांश

उद्धार विश्वव्यापी रूप में, प्रत्येक मनुष्य के लिए प्रस्तुत किया गया है। परमेश्वर ने वह उद्धार अपने पुत्र का बलिदान देकर उपलब्ध करवाया है। परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार सचमुच ''... वह अनुग्रह ... है, जो सब मनुष्यों'' के लिए है (तीतुस 2:11), परन्तु स्वेच्छापूर्वक अर्पित किए गए उद्धार के उस दान को ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत फैसला है।

यीशु के समय यहूदियों के बीच अज्ञानता, घमण्ड, पूर्वधारणा और राष्ट्रीयता के कारण, इस प्रश्न के समाधान के लिए दो दशक लग गए कि अन्यजातियों के लोगों को मसीहा की सेवा के लिए ग्रहण किया जाए या नहीं। जिस द्वंद्व ने जातियों के बीच कोलाहल मचाया था, वह कलीसिया में भी धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था।

जिस समस्या का मसीही लोगों को आज सामना करना पड़ रहा है, वह शायद जातीय झगड़े की उतनी नहीं जितनी यीशु की आज्ञा को समझने की उदासीनता है। प्रेरितों को सारी जातियों में, सारे संसार में जाकर प्रचार करने की उसकी आज्ञा में प्रत्येक पीढ़ी के

सभी मसीहियों को निरन्तर बार-बार मिलने वाली ज़िम्मेदारी निहित है। क्या इसका अर्थ यह नहीं कि पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर न्याय का दिन आने तक सारे जगत में कम से कम एक बार सुसमाचार का प्रचार होना आवश्यक है? मुश्किल से! इसका अर्थ यह है कि सारे जगत में प्रत्येक पीढ़ी में बार-बार सुसमाचार का प्रचार हो!

आज के समय के लोग अपनी पिछली पीढ़ियों या भावी पीढ़ियों में प्रचार नहीं कर सकते हैं। आज के लोग जिस पीढ़ी में प्रचार कर सकते हैं, वह केवल वर्तमान पीढ़ी ही है। सारी पृथ्वी को सुसमाचार से ढक देने का परमेश्वर का निर्देश आज भी व्यापक और मान्य है। सुसमाचार सबके लिए है, परन्तु आज का संसार तब तक उस शुभ समाचार को नहीं सुन सकता जब तक आज के दिन रहने वाले मसीही लोग उसे फैलाते नहीं।